जनसंपर्क विभाग, अमेरिकी दूतावास
आधिकारिक पाठ्य-सामग्री
शांतिपथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली 110021 दूरभाषः 011.24198000 एक्सटेंशनः 8827
फैक्सः 011. 24198817 वेबसाइटः http://newdelhi.usembassy.gov

अमेरिकी डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट
प्रवक्ता कार्यालय

तुरंत जारी करने के लिए
2009/टी9-1

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट हिलेरी रोडहैम क्लिंटन का उद्बोधन
जुलाई 18, 2009
ताज पैलेस होटल
मुंबई, भारत

सेक्रेटरी क्लिंटनः गुड मॉर्निंग। भारत में फिर से आना मेरे लिए बहुत बड़े सम्मान और व्यक्तिगत तौर पर खुशी का मामला है। यह वह देश है जिसकी मैं बहुत प्रशंसा करती हूं और जहां मुझे असाधारण अनुभव हुए हैं। यह ऐसा देश है जिसने उन गंभीर मुद्दों के बारे में मेरे विचारों को गहराई से प्रभावित किया है जिनसे आज दुनिया जूझ रही है। इसलिए विदेश मंत्री के तौर पर वापसी वाकई खुशी की बात है।

अगले कुछ दिनों के दौरान मैं 21वीं सदी के लिए अमेरिका और भारत के महत्वपूर्ण सामरिक संबंधों को मज़बूत करने के लिए राष्ट्रपति बराक ओबामा और अमेरिकी जनता की ओर से कार्य करूंगी। मैं आर्थिक वृद्धि और विकास से लेकर जलवायु परिवर्तन तक, शिक्षा एवं स्वास्थ्य से लेकर परमाणु अप्रसार और आतंकवाद से मुकाबले तक के मुद्दों पर मिलकर प्रभावी तौर पर काम करने हेतु अपने प्रयासों को ज्यादा व्यापक और गहरे बनाने के लिए नई दिल्ली में सरकारी अधिकारियों से मिलूंगी।

गरीबी दूर करना, जिसके बारे में मैं जानती हूं कि यह भारत सरकार और भारत के लोगों का केंद्रीय लक्ष्य है, एक ऐसा मसला है जिसके बारे में हम जिस तरह से भी मदद कर सकते हैं, करने की पेशकश करेंगे। राष्ट्रपति ओबामा और मेरा विश्वास है कि हम भारत के साथ अपने संबंधों में एक नए और ज्यादा संभावनाओं वाले दौर में प्रवेश कर रहे हैं। और हम हमारी भागीदारी को ज्यादा व्यापक और गहरी बनाने के लिए काम करने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हमारी सरकारों के बीच विस्तारित बातचीत आवश्यक और उत्सुकता जगाने वाली है। लेकिन इस भागीदारी की ताकत आखिरकार भारत और अमेरिकी जनता के बीच गहरे और सतत संबंधों पर टिकी है। इस सप्ताह वाशिंगटन में एक भाषण में मैंने कहा कि 21वीं सदी की समस्याएं एक नए दिमागी सोच और सरकारों के साथ तथा उससे भी आगे गैरसरकारी संगठनों, व्यवसायों और खुद लोगों के साथ भागीदारी बनाने की इच्छा की मांग करती हैं। विश्व की समस्याएं इतनी ज्यादा जटिल हैं कि इससे कम की गुंजाइश नहीं।

मैंने अभी भारत के कारोबार जगत के लीडरों के साथ संपन्न एक दिलचस्प बैठक में भाग लिया जिसमें इस बात पर चर्चा हुई कि हम भारत और अमेरिका में कुछ नया करने की प्रवृत्ति और उद्यमिता का हमारे समाजों में ज्यादा व्यापक स्तर पर समृद्धि के लिए कैसे लाभ उठा सकते हैं और साझा समस्याओं को हल करने के लिए किस तरह मिलकर काम कर सकते हैं। इस संवाददाता सम्मेलन के बाद मैं स्वयं का कारोबार करने वाली महिलाओं के संघ **सेवा** से जुड़ी महिलाओं के एक कार्यक्रम में जाऊंगी। यह ऐसी संस्था है जिसके साथ काम करते हुए मेरे लिए खुशी की बात है कि अब लगभग 15 साल हो गए हैं। यह ऐसी संस्था है जिसने भारत में लोगों की जिंदगियों और समुदायों में परिवर्तन लाने में मदद की है। इसने समाज के हाशिये पर रहने वाली महिलाओं को उनके समुदायों के केंद्र में लाने और (सुनाई नहीं दिया) के लिए एक मॉडल सामने रखा है।

मैं इसके बाद (सुनाई नहीं दिया) विद्यार्थियों के साथ शिक्षा और सेवा के बारे में चर्चा में खान के साथ भाग लूंगी और मुझे यकीन है कि उसमें वह मुख्य आकर्षण होंगे। और कल मैं स्वच्छ ऊर्जा और कृषि उत्पादन से जुडे वैज्ञानिकों और नई खोज करने वालों से मिलूंगी कि अमेरिका और भारत वैश्विक भुखमरी के प्रभावी मुकाबले और स्वच्छ ऊर्जा के भविष्य की ओर जाने के लिए किस तरह मिलकर काम कर सकते हैं।

मैं व्यक्तिगत तौर पर यह भी कहना चाहती हूं कि आज सुबह ताज और (सुनाई नहीं दिया), दोनों होटलों के कर्मचारियों से मुलाकात और गत नवंबर के हमलों के मेमोरियल पर अपनी श्रद्धांजलि ने मेरे हृदय को छू लिया। आप जानते हैं कि इस होटल और इस शहर ने उग्रवाद और हिंसा (सुनाई नहीं दिया) के चलते काफी दुख झेला है और दर्दनाक क्षति को सहन किया है। इस होटल और शहर में अन्यत्र काम करने वाले महान पुरुष और स्त्री निरर्थक हिंसा के समय साहस के साथ डटे रहे और ज्यादा नुकसान रोकने और अन्य लोगों को हानि से बचाने के लिए मदद को रुके रहे। वे हमारी कृतज्ञता के हकदार हैं।

26 नवंबर का घटनाक्रम जैसे ही सामने आया, अमेरिकी जनता ने भारतीय जनता के साथ एकजुटता दिखाई, ठीक उसी तरह जैसे कि भारत ने 11 सितंबर के बाद अमेरिका का साथ दिया। ये घटनाएं हमारी साझा स्मृति का हिस्सा हैं। जकार्ता, इंडोनेशिया में कल की बमबारी यह दुखद याद दिलाती है कि ऐसे हिंसक उग्रवाद का खतरा अब भी बहुत वास्तविक है। यह वैश्विक है, बेरहम है, बर्बादी की ओर ले जाने वाला है, और इसे रोका जाना चाहिए।

अमेरिका भारत सरकार, इंडोनेशियाई सरकार और अन्य राष्ट्रों और लोगों के साथ काम करेगा जो इन हिंसक उग्रवादियों का मुकाबला कर उन्हें पराजित कर शांति और सुरक्षा चाहते हैं। और हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश करेंगे अवसरों का ऐसा विश्व बनाने की जहां प्रगति, शांति और समृद्धता के लिए ज्यादा जगह हो, और असहिष्णुता, हिंसा और घृणा के लिए कम स्थान हो।

लोकतंत्र, रक्षा और विकास के मुद्दों पर बातचीत के लिए आज भारत में मौजूद होना उस भविष्य के लिहाज से अहम है जो हम भारत और अमेरिका के लिए ही नहीं, संपूर्ण विश्व के लिए चाहते हैं। हम इस बात से प्रसन्न है कि आपको जल्द ही हमारे नए राजदूत को जानने का मौका मिलेगा। पूर्व कांग्रेसमैन टिम रोमर हमारे

देश में आतंकवाद से जुडे मामलों में अगुआ रहे हैं और विकास के प्रतिबद्ध पक्षधर हैं, वह यहां हमारे और आपके देश की सेवा में होंगे।

हम बहुत सी चुनौतियों का सामना करते हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि अपने साझा हितों, हमारे साझा मूल्यों, और 21वीं सदी में साझा आकांक्षाओं के चलते हम मिलकर इन चुनौतियों का सामना करने को तैयार हैं। यदि हम अब अपने साझा हितों और सहयोग की गतिविधियों को शुरू करें तो मुझे विश्वास है कि तब हम सिर्फ भारत और अमेरिकी लोगों के लिए ही सफल नहीं होंगे बल्कि उस पूरी दुनिया के लिए सफल होंगे जो हम अपने बच्चों के लिए बनाने की उम्मीद रखते हैं।
सभी को बहुत बहुत धन्यवाद।

मिस्टर केली: विदेश मंत्री कुछ सवालों के जवाब देगीं। पहला सवाल लचलान करमाइकल (सुनाई नहीं दिया)

सेक्रेटरी क्लिंटन: वह लोगों का नाम बोलेंगे। ओके।

सवाल: मैडम सेक्रेटरी --

सेक्रेटरी क्लिंटन: क्या आप खड़े हो सकते हैं?

सवाल: भारत द्वारा पाकिस्तान को दी गई रियायतों पर भारत में हंगामा है। मुंबई हमलों को अंजाम देने वाले न्याय के दायरे में नहीं लाए गए हैं जबकि भारत के लिए शांति की बात हो रही है। क्या आपको आशंका है कि इससे- आप (सुनाई नहीं दिया) इन रियायतों के लिए अमेरिका भारत पर दबाव बढ़ा रहा है?
विदेश मंत्री क्लिंटन: मैं भारत सरकार की ओर से नहीं बोलूंगी। मैं समझती हूं कि भारत एक संप्रभु राष्ट्र है जो अपने हितों की रक्षा करने में, अपने लोगों की सुरक्षा और अधिकारों के लिए खड़े होने के लिए पूरी तरह सक्षम और तैयार है। और आतंकवाद के खिलाफ खड़े होने में भारत द्वारा उठाए गए कदमों का हमने बहुत समर्थन किया है।

स्पष्ट तौर पर भारत और पाकिस्तान की सरकारों के द्वारा उनके बीच मौजूद बहुत ही मुश्किल मुद्दों की पड़ताल के लिए दोनों देशों के बीच बातचीत करने का फैसला इन सरकारों पर निर्भर है। और मैं सोचती हूं कि अमेरिका, जैसा आप जानते हैं, सरकारों द्वारा उठाए कदमों का बहुत समर्थक है, लेकिन हम इसमें शामिल नहीं हैं और किसी खास स्थिति को बढ़ावा नहीं दे रहे हैं। हम भारत सरकार के हाथों होने वाले फैसलों की संप्रभुता का सम्मान करते हैं।

मिस्टर केली: अगला सवाल, (सुनाई नहीं दिया)। माइक्रोफोन का इंतजार करें।

सेक्रेटरी क्लिंटन: धन्यवाद।

सवालः (सुनाई नहीं दिया) भारत (सुनाई नहीं दिया), और इस मुलाकात के सिलसिले में (सुनाई नहीं दिया) और विशेष तौर पर भारत में (सुनाई नहीं दिया)?

सेक्रेटरी क्लिंटनः मैं भारतीय महिलाओं से बहुत प्रभावित हूं। और जैसा कि आपने कहा, मैं बहुत से ऐसे योग्य लोगों के साथ शामिल रही हूं जिन्होंने पिछले सालों में भारत में महिलाओं की जिंदगी में आर्थिक अवसरों को बढ़ाने और उन्हें ज्यादा विकल्प उपलब्ध कराने के लिए भारत में काम किया है। मैं सोचती हूं कि काफी ज्यादा मात्रा में प्रगति हुई है। सेवा के कार्यक्रम में शामिल होने और उनके काम के विस्तार के बारे में ताजा जानकारी लेने के दौरान मैं पुराने मित्रों से मिलने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही हूं।

लेकिन, स्पष्ट तौर पर मेरी नजर में इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि महिलाओं की प्रगति किसी भी देश की प्रगति से सीधे जुड़ी है। महिलाओं को जब समान अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कर्ज की सुविधा, अपने परिवारों और समुदायों के लिए फैसले लेने में भूमिका और ज्यादा मिलेगी, तो सभी लोगों का तेजी से विकास होगा।

और इसलिए जो प्रगति हुई है, वह असाधारण है, और मैं जानती हूं कि अभी बहुत कुछ किया जाना है। आपकी सरकार की प्राथमिकता है कि महिलाओं में साक्षरता बढ़े और भारत में महिलाओं को ज्यादा अवसर मिलें। और मैं व्यक्तिगत तौर पर, और विदेश मंत्री के बतौर, इस विकास को बढ़ावा देने और इसकी मदद करने के लिए मैं जो कुछ भी कर सकती हूं, करूंगी।

मिस्टर केलीः अगला सवाल अरशद मोहम्मद, रायटर्स

सवालः मैं समझता हूं कि एक्जक्यूटिव के साथ सुबह बैठक में जलवायु परिवर्तन का मुद्दा उठा। दो चीजें: पहला, आप किस तरह (सुनाई नहीं दिया) कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करेंगे जिससे कि भारत और चीन जैसे देश विकास करना जारी रखें और अपने लोगों के लिए रोजगार पैदा कर सकें।

दूसरे, एक एक्जीक्यूटिव, जो रिलायंस के प्रमुख है, मेरी जानकारी में वह उन कंपनियों में से एक है जो ईरान को पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात (सुनाई नहीं दिया) करने में शामिल है, - जैसा कि आप जानती हैं, कैपिटल हिल में यह (सुनाई नहीं दिया) इस निर्यात को ईरान के खिलाफ इस्तेमाल करने की संभावना यदि वे बातचीत के लिए तैयार नहीं होते।

क्या आपको इसे उठाने की आशा है, कहां - किस तरह के पुशबैक की आप उम्मीद करती हैं, यह देखते हुए कि इस देश के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण कारोबार है?

सेक्रेटरी क्लिंटनः अरशद, पहले मैं यह बता दूं कि जलवायु परिवर्तन और स्वच्छ ऊर्जा के बारे में हुई चर्चाएं बहुत ही फलदायी रहीं। और हमने जो बात कही, जिसको हम रेखांकित करते हैं और जिसमें पूरे तौर पर यकीन करते हैं, वह यह है कि गरीबी हटाने और कम कार्बन उत्सर्जन अर्थव्यवस्था की ओर जाने में कोई अंतर्निहित विरोधाभास नहीं है। अमेरिका चाहता है कि भारत अपने करोड़ों और करोड़ों लोगों की गरीबी दूर करने के लिए विकास एवं प्रगति और अपने सपने साकार करने के लिए लोगों को ज्यादा अवसर उपलब्ध कराना जारी रखे। और यह ऐसी चीज है जिसके बारे में वे नहीं चाहेंगे कि कोई देश उनसे हटने को कहे।

हमारा प्वाइंट सरल है: हम अब राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ, इस बात को स्वीकार करते हैं कि हमने गलतियां कीं- अमेरिका- और हमने अन्य विकसित देशों के साथ, जलवायु परिवर्तन से जुड़ी जिन समस्याओं को हम झेल रहे हैं, उनमें काफी योगदान किया है। हम उम्मीद करते हैं कि भारत जैसा महान देश उन्हीं गलतियों को नहीं दोहराएगा। और जैसे कि भारत में कुछ साल पहले कुछ ही टेलीफोन थे जो हमारे द्वारा टेलीफोन सेवाओं के लिए बनाई इन्फ्रास्ट्रक्चर से भी आगे बढकर अब ५० करोड़ तक पहुंच चुके हैं जिनमें ज्यादा सेलफोन हैं। हम मानते हैं कि अपने लोगों को गरीबी से ऊपर उठाने और तेजी से विकास की ओर जाने के साथ ही जलवायु परिवर्तन से कैसे निपटना है, इसके लिए भारत में नई चीजे करने और उद्यमिता का पर्याप्त गुण है।

यह साफ है कि ये फैसले भारत के लोगों पर निर्भर हैं। लेकिन हमारी बातचीत के आधार पर निजी क्षेत्र स्वच्छ ऊर्जा में आर्थिक अवसरों की तलाश कर रहा है और इन तौर-तरीकों की भी तलाश कर रहा है कि कम कार्बन ऊर्जा उत्पादन की तरफ किस तरह बढ़ा जाए। हम इस तरह की बातचीत में शमिल रहने वाले हैं। हमारे जलवायु परिवर्तन दूत, टॉड स्टर्न, जैसा कि आप जानते हैं, यहां मेरे साथ हैं। अगले कुछ दिनों में वह निजी और सरकारी क्षेत्र के बहुत से लोगों के साथ गहन विचार-विमर्श करेंगे। हम उन चुनौतियों के बारे में अच्छी तरह अवगत हैं जिनका सामना भारत को करना पड़ रहा है। लेकिन हम सोचते हैं कि हम इसमें थोड़ा बहुत ही रचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं।

और हमने आपके दूसरे मसले पर चर्चा नहीं की, यह ऐसी चीज है जिसे हम बाद में देखेंगे।

मिस्टर केली: (सुनाई नहीं दिया)

सेक्रेटरी क्लिंटन: ओह, आप कैमरे के साथ चल रहे हैं, मुझे पक्का पता नहीं। क्या वह कैमरे के साथ चल रहा है?

मिस्टर केली: हां।

सेक्रेटरी क्लिंटन: ओह, आपको बैठना होगा, (सुनाई नहीं दिया)

सवाल: (सुनाई नहीं दिया) जब आपने कहा था कि आतंकवाद के खिलाफ जो कार्रवाई पाकिस्तान कर रहा है-- आप उससे खुश और संतुष्ट नहीं है। लेकिन (सुनाई नहीं दिया) तालिबान के मामले में , क्योंकि यात्रा में बहुत ही समझदारी की बात हो रही है, - बहुत कुछ नहीं किया गया है। (सुनाई नहीं दिया) न तो लश्कर, न ही जैश। और यह भी कि क्या आपको वाकई महसूस होता है कि पाकिस्तान (सुनाई नहीं दिया) भारत में 26 नवंबर के दोषियों?

सेक्रेटरी क्लिंटन: पिछले छह महीने में जो हमने देखा है, उसके आधार पर मुझे विश्वास है, वही बात मैं बोल रही हूं- इसे आधार पर आतंकवादियों पर कार्रवाई के लिए सिर्फ सरकारी स्तर पर ही नहीं, बल्कि स्वतंत्र समाज

के स्तर पर ज्यादा प्रयास और प्रतिबद्धता है। और मुझे यकीन है कि मिलजुलकर प्रयास हो रहे हैं जिनकी ओर और उनसे मिलने वाले नतीजों को हम देख सकते हैं।

पाकिस्तान से आने वाली इस प्रतिबद्धता के नतीजों के बारे में कुछ कहना अभी जल्दबाजी होगी। मुझे विश्वास है कि अगले कुछ दिनों में इस बात पर ज्यादा जागरूकता होगी कि मुंबई हमलों के आतंकवादियों से निपटने और न्याय प्रक्रिया के तहत लाने की उम्मीद के बारे में प्रतिबद्धता होगी या नहीं।

आपने उन अन्य आतंकवादी संगठनों के बारे में सवाल पूछा है जिनका फोकस भारत ही है। साफ तौर पर हमारा मानना है कि उन्हें खत्म किया जाना चाहिए। उन्हें पराजित किया जाना चाहिए और छिन्न-भिन्न किया जाना चाहिए। हमने यह बात स्पष्ट तौर पर कही है और हम ऐसा करना जारी रखेंगे।

मिस्टर केलीः अगला सवाल (सुनाई नहीं दिया)

सवालः हम आपसे यह पूछना चाहते हैं कि क्या सोमवार को ऐसा कोई एंड यूजर मॉनिटरिंग समझौता होना तय है जिसके तहत प्रमुख अमेरिकी रक्षा अनुबंधों को अनुमति मिल पाएगी और ज्यादा अमेरिकी रक्षा कॉन्ट्रेक्टर के यहां ज्यादा कारोबार करने से जुडे अन्य संबंधित समझौते होंगे?

और यह भी कि क्या आप हमें उस सामरिक आर्थिक वार्ता के बारे में कुछ बता सकते हैं जिसकी आप योजना बना रहे हैं। और यह एसईडी से कैसे अलग होगी जो चीन के साथ पहले से ही है?

सेक्रेटरी क्लिंटनः पहली बात तो यह है कि हम कई समझौतों को निपटाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। मुझे आशा है कि हम ऐसे समझौतों को निपटा पाएंगे और उनकी घोषणा करेंगे। लेकिन मैं इससे किसी खबर पर नहीं पहुंचना चाहती। हम कड़ी मेहनत कर रहे हैं। मेरे विचार में यही असल बात है।

दूसरे, हम भारत के साथ होने वाली वार्ता को बेहद महत्वपूर्ण मानते हैं। इसके पांच स्तंभ होंगे। यह बहुत व्यापक है, यह सामरिक सहयोग, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों के पार जाती है। यह उतनी व्यापक वार्ता है जितना कि आप कल्पना कर सकते हैं। और हम इसके बारे में घोषणा करने की ही नहीं, बल्कि इस पर काम करने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। कारोबारी और औद्योगिक एक्जक्यूटिव के साथ आज सुबह हुई बैठक में हम ऐसे कार्यों की लंबी सूची के साथ बाहर आए जिन पर हम काम करने वाले हैं।

हमने कृषि उत्पादकता बढ़ाने, शिशुओं को माइक्रोन्यूट्रिएंट प्रदान करने के बारे में बातचीत की जिससे कि पोषाहार के मामले में ऐसी कोई खामी न रहे कि उनका शारीरिक और दिमागी विकास प्रभावित हो। हमने स्वच्छ ऊर्जा, हमारे विश्वविद्यालयों के बीच बेहतर सहयोग, जीवनरक्षक दवाएं उत्पादित करने के लिए हमारे दवा उद्योग के साथ काम करने के बारे में बातचीत की।

मेरा मतलब है कि हमने बहुत व्यापक बातचीत की। यह सिलसिलेवार तय वार्ता की सिर्फ एक झलक है। हम भारत से ऐसे समय संबंधों को बढ़ाने की सोच रहे हैं जब मेरे विचार में समस्याओं को हल करने पर ध्यान केंद्रित करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। हम सिर्फ समस्याओं पर बातचीत करने से आगे देख रहे हैं, अब हम ऐसे तरीकों से जुडना चाहते हैं जिससे कि हमें इन समस्याओं को हल करने में मदद मिले। और मैं सोचती हूं

कि सिर्फ भारत सरकार ही नहीं, बल्कि भारत के निजी क्षेत्र, गैरसरकारी संगठनों और अन्य की हमारे साथ काम करने की बेहद इच्छा है। और हमें इसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा है।

मिस्टर केली: और आखिरी सवाल (सुनाई नहीं दिया) न्यूज से (सुनाई नहीं दिया)

सवाल: (सुनाई नहीं दिया) अमेरिका पाकिस्तान को आतंक के खिलाफ अपनी लड़ाई के लिए तैयार करेगा, विशेषकर सौंपने (सुनाई नहीं दिया) और अभी आतंकवादी (सुनाई नहीं दिया)
भारत? और क्या अमेरिका कुछ तय कर रहा है भारत- जो (सुनाई नहीं दिया)
पाकिस्तान के खिलाफ लड़ाई (सुनाई नहीं दिया) ?

सेक्रेटरी क्लिंटन: फिर से, यही बात कि भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत भारत और पाकिस्तान के बीच है। इस बारे में साफ समझ होनी चाहिए कि हम भारत के इस अधिकार का आदर करते हैं कि वह भारतीयों के श्रेष्ठ हितों के मद्देनजर अपने फैसले ले। मैं भारत और पश्चिम के बीच संबंधों पर फोकस कर रही हूं। यह ऐसा संबंध है जिसे हम प्रभावित कर सकते हैं और हम इस पर काम करने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। और स्पष्ट तौर पर हम अगले कुछ दिनों में अपने भारतीय पक्ष से बातचीत करेंगे कि आतंकवाद से किस तरह बेहतर तरीके से निपटा जा सकता है।

हमारी पूरी एकजुटता और सहानुभूति है, 11 सितंबर के दिन जो कुछ हमने किया, उससे गुजरने के बाद हम जानते हैं कि यह कितना महत्वपूर्ण है- हम अपने खिलाफ और दुनियाभर में हमारे मित्र और सहयोगियों को आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए लड़ाइयां लड़ रहे हैं। इसलिए हम भारत के साथ काम करने को प्रतिबद्ध है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम मिलकर प्रभावी हो पाएं। इसे करने के अलग-अलग तरीके हैं। कुछ काम हम मिलकर करेंगे। कुछ काम, भारत खुद तय करेगा कि उसे अपने हिसाब से कैसे सबसे अच्छे तरीके से करने हैं।

लेकिन मेरे लिए असली बात यह है कि हमारी सरकार आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में प्रतिबद्ध है। और हम उन सभी से जिनके साथ हमारे संबंध है और जिन्हें हम भविष्य की दुनिया का हिस्सा मानते हैं, उम्मीद करते हैं कि वे सुनिश्चित करें कि आतंकवादियों को प्रशिक्षण न मिले और उनकी तैनाती न हो, अपनी भूमि पर आतंकवाद के जड़ें जमाने से रोकने के लिए कड़े कदम उठाएं। और दुनियाभर के लिए हमारा यह विश्वास है, कोई एक देश नहीं, बल्कि हरेक। और हम इसी ओर काम कर रहे हैं, और हम सेवा के लिहाज से भारतीय दृष्टिकोण से हर उस तरह से काम करेंगे जो कि उपयोगी तय पाया जाए।
सभी को बहुत बहुत धन्यवाद।

***